भक्ति-धारा

कवि परिचय – सूरदास कृष्णभक्ति धारा के प्रमुख कवि हैं। इनका जन्म सन् 1478 ई. में रुनकता या रेणुका क्षेत्र में माना जाता है। कुछ विद्वान इनका जन्म दिल्ली के निकट सीही गाँव में मानते हैं। किशोरावस्था में ही ये मथुरा चले गए और बाद में मथुरा और वृन्दावन के बीच गऊघाट पर रहने लगे। एक बार वल्लभाचार्य गऊघाट पर रुके। सूरदास ने उन्हें स्वरचित एक पद गाकर सुनाया। बल्लभाचार्य ने इनको कृष्ण की लीला का गान करने का सुझाव दिया। ये वल्लभाचार्य के शिष्य बन गए और कृष्ण की लीला का गान करने लगे।

ऐसी मान्यता है कि सूरदास जन्मांध थे पर उनके मर्मस्पर्शी चित्रण को देखकर इस बात पर विश्वास नहीं होता, सूरदास के पदों का संकलन 'सूरसागर' है। 'सूरसारावली' और 'साहित्य लहरी' अन्य रचनाएँ हैं। इनमें से 'सूरसागर' ही उनकी अक्षय कीर्ति का आधार ग्रन्थ है। मान्यता है कि सूरसागर में सवा लाख पद हैं पर अभी तक लगभग दस हजार पद ही प्राप्त हुए हैं।

सूरदास प्रेम और सौन्दर्य के अमर गायक हैं। उन्होंने मुख्यत: वात्सल्य और शृंगार का ही चित्रण किया है लेकिन वे इस क्षेत्र का कोना-कोना झाँक आए हैं। बाल जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जिस पर कवि की दृष्टि न पड़ी हो, गोपियों के प्रेम और विरह का वर्णन भी बहुत आकर्षक है। संयोग और वियोग दोनों का मर्मस्पर्शी चित्रण सूरदास ने किया है। इन्होंने एक रस के अंतर्गत नए-नए प्रसंगों की उद्भावना की है। इनके सूरसागर में गीतिकाव्य के भीतर से महाकाव्य का स्वरूप झाँकता हुआ प्रतीत होता है। सूरसागर का भ्रमरगीत प्रसंग सबसे चर्चित है। इस प्रसंग में गोपियों के प्रेमावेश ने ज्ञानी उद्धव को प्रेमी एवं भक्त बना दिया है। सूर के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है इनकी तन्मयता। वे जिस प्रसंग का वर्णन करते हैं उसमें आत्मविभोर कर देते हैं।

सूरदास की भक्ति मुख्यत: सख्यभाव की है परन्तु उनमें विनय, दाम्पत्य और माधुर्य भाव का भी मिश्रण है। सूरदास का सम्पूर्ण काव्य संगीत की राग-रागनियों में बँधा हुआ पद-शैली का गीत काव्य है। उसमें भाव साम्य पर आधारत उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं और रूपकों की छटा देखने को मिलती है। उनके पदों में ब्रजभाषा का बहुत ही परिष्कृत और निखरा हुआ रूप देखने को मिलता है। माधुर्य की प्रधानता के कारण इनकी भाषा बड़ी प्रभावोत्पादक हो गई है। व्यंग्य, वक्रता और वाग्वैदग्धता सूर की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। उनका काव्य वस्तुत: 'मानव प्रेम का जयगान' है।

इनकी मृत्यु सन् 1583 ई. के लगभग मानी जाती है।

कवि परिचय – मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म सन् 1492 ई. में जायस नामक ग्राम में माना जाता है। ये निर्गुण भक्ति के प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। ये सूफी कवि थे। जायसी ने अपने दो गुरुओं का उल्लेख किया है, एक सैयद अशरफ और दूसरे शेख मुहीउद्दीन। सूफी फकीरों के अलावा जायसी ने कई साधुओं के सत्संग का भी लाभ उठाया। जायसी के तीन ग्रन्थ मिलते है 'पद्मावत' 'अखरावट' और 'आखिरी कलाम'। इनमें पद्मावत अत्यंत चर्चित है और यही उनकी अक्षय कीर्ति का आधार है।

जायसी निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे और उसकी प्राप्ति के लिए प्रेम की साधना में विश्वास रखते थे। इस प्रेममार्ग में उन्होंने विरह पर सर्वाधिक बल दिया। अपने प्रिय (ईश्वर) के वियोग की तीव्रतम अनुभूति भक्त को साधना पथ पर अग्रसर होने को प्रेरित करती है। पद्मावत में प्रेमगाथा परम्परा अपने उत्कर्ष पर पहुँची है। पद्मावत एक प्रबंध काव्य है। इसमें कवि ने रानी पद्मावती और राजा रत्नसेन की प्रेमकथा को आधार बनाकर प्रेम की मार्मिक झाँकी प्रस्तुत की है। पद्मावत में एक ओर तो इतिहास और कल्पना के सुन्दर संयोग का निरूपण है तो दूसरी और इसमें आध्यात्मिक प्रेम की अत्यंत भावमयी अभिव्यंजना है। इसी प्रकार की रचनाओं को 'प्रेमाख्यान' कहा गया है।

सूफी प्रेम पद्धति के निर्वाह के लिए जायसी ने अपने काव्य में अप्रत्यक्ष सत्ता के संकेत भी दिए हैं। सभी सूफी कवियों ने अपने कथानकों की नायिकाओं को ईश्वर का प्रतीक माना है, जायसी की दृष्टि से पद्मावती ब्रह्म सत्ता का प्रतीक है। इसी कारण वे पद्मावती के माध्यम से जगह-जगह परोक्ष सत्ता की ओर संकेत करते हैं। वस्तुत: कवि की वृत्ति ऐसे स्थलों पर रमी है जहाँ मानवीय प्रेम के सहज रूप का चित्रण हुआ है। इस अर्थ में 'नागमती का वियोग वर्णन' हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। जायसी का विरह वर्णन अत्यंत विशद् एवं मर्मस्पर्शी है।

जायसी ऐसे संवेदनशील कवि थे। जो जायस में एक साधारण किसान की हैसियत से रहते थे। उनके द्वारा प्रयुक्त उपमा, रूपक, लोकोक्तियाँ, मुहावरे यहाँ तक कि काव्य भाषा की भंगिमा पर भी किसान जीवन की छाप है। कवि पद्मावत की कथा के लिए ही नहीं 'बारहमासा' जैसे मार्मिक प्रसंगों की उद्भावना के लिए भी लोक संस्कृति का आश्रय लेता है।

जायसी की भाषा ठेठ अवधी है और इसकी रचना, दोहा-चौपाइयों की छंद पद्धति पर हुई है। इसमें जायसी ने फारसी की मसनवी शैली को अपनाया है? जिसमें कथा सर्गों में बँटी होकर बराबर चलती रहती है। केवल स्थान-स्थान पर घटनाओं या प्रसंगों का उल्लेख शीर्षक के रूप में होता है, लेकिन काव्य का रूप विदेशी होते हुए भी उसकी आत्मा विशुद्ध भारतीय है।

इनकी मृत्यु सन् 1542 में हुई मानी जाती है।

केन्द्रीय भाव

परमसत्ता के प्रति समर्पण भाव का नाम भक्ति है। यही समर्पण भाव प्राणीमात्र में विस्तार पाता है। इसीलिए संत-हृदय को नवनीत से भी अधिक द्रवणशील माना गया है। भक्ति में व्यक्ति का अहंकार तिरोहित हो जाता है। भक्ति के अंतर्गत ईश्वर की अर्चना और वन्दना का प्रावधान है। भक्तिकाल में ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों की आराधना का विधान किया गया है। सगुण भक्ति को मानवीय आचरण के उदात्तभावों का समुच्चय माना गया है। ईश्वर के लोकरक्षक और लोकरंजक स्वरूप को इस धारा के अंतर्गत प्रतिष्ठित किया गया है। कवियों ने इसी भाव-भूमि पर राम और कृष्ण के लोकरंजक कार्यों का वर्णन किया है। निर्गुण भक्ति में ज्ञान और प्रेम के माध्यम से सामाजिक सुधार के अनेक पक्षों की अभिव्यक्ति हुई है।

निर्गुण काव्यधारा के कवियों ने सामाजिक समरसता की प्रतिष्ठा की है। जहाँ सगुण काव्य के अंतर्गत तुलसीदास और सूरदास जैसे कवियों ने मानवीय जीवन के अनेक श्रेष्ठ और उदात्त पक्षों को राम और कृष्ण के चरित्रों के माध्यम से प्रकट किया है, वहीं निर्गुण भक्ति के अंतर्गत कबीर और जायसी ने सामाजिक चेतना के जागरण हेतु विवेक और प्रेम को आधार बनाया है। 'रामचरित मानस' और 'पद्मावत' जैसे महाकाव्य इस युग में ही रचे गए हैं। गीतों और पदों के माध्यम से भी इस युग की कविता को समृद्ध किया गया है। आचरण की पवित्रता और ईश्वर की आराधना को भक्त कवियों ने सर्वाधिक महत्व प्रदान किया है। इस युग के अधिकांश कवि पहले भक्त हैं फिर कवि हैं। इनका काव्य लोककल्याण की भावना से ओतप्रोत है।

सूरदास ने अपने काव्य के द्वारा कृष्ण की लीलाओं को जन-जन तक पहुँचाया है। वे सख्य भाव से कृष्ण की आराधना करने वाले भक्त कवि हैं। उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि सगुण ईश्वर हमारे लिए अधिक अनुकूल हैं क्योंकि उसके आचरण हमारे लिए आदर्श बनते हैं। उनके विनय के पदों में ईश्वर की कृपा और भक्त की न्यूनताओं का वर्णन किया गया है। वे भक्त के रूप में अपने अवगुणों का बखान करते हैं और अपने आराध्य के समदर्शी स्वरूप की भी सराहना करते हैं।

'जायसी' निर्गुणधारा के प्रेममार्गी कवि हैं। अपने ग्रंथ 'पद्मावत' में उन्होंने प्रेम के महत्व को प्रतिपादित किया है। वे सृष्टि रचना के मूल में ईश्वरीय शक्ति का स्मरण श्रद्धा-भाव के साथ करते हैं। इस तरह से उनके द्वारा रचित 'स्तुति खंड' में ईश्वरीय शक्ति के प्रति कृतज्ञता भाव के साथ-साथ सृष्टि की विभिन्नताओं में ईश्वरीय चेतना की एकसूत्रता का समाहित होना, सृष्टि की समरसता की ओर भी संकेत करता है।

विनय के पद

अविगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूँगे मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सुनिरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौ अगम अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जात-जुगति-बिनु, निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम बिचारहि तातैं, सूर सगुन पद गावै ॥ 1॥

हमारे प्रभु औगुन चित न धरौ।
समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार करौ।
इक लोहा पूजा मैं राखत, इक घर बधिक परौ।
सो दुविधा पारस नहि जानत, कंचन करत खरौ।
इक नदिया, इक नार कहावत, मैलौ नीर भरौ।
जब दोऊ मिलि एक बरन भए, सुरसरि नाम परौ।
तन माया ज्यों ब्रह्म कहावत, सूर सुमिलि बिगरौ।
कै इनको निरधार कीजिए, कै प्रन जात टरौ ॥ 2॥

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
तुम सौं कहा छिपी करुनामय, सबके अंतरजामी।
जो तन दियौ ताहि बिसरायौ, ऐसौ नोन-हरामी।
भरि-भरि द्रोह बिषै कौं धावत, जैसे सूकर ग्रामी ।
सुनि सतसंग होत जिय आलस, बिषयिनि संग बिसरामी।
श्री हरि-चरन छाँड़ि बिमुखनि की, निसि-दिन करत गुलामी।
पापी परम, अधम अपराधी, सब पतितनि मैं नामी।
सूरदास प्रभु अधम-उधारन, सुनियै श्रीपति स्वामी ॥ 3॥

जापर दीनानाथ ढरैं।
सोइ कुलीन, बड़ौ सुन्दर सोई, जिहि पर कृपा करैं।
कौन विभीषन रंक-निसाचर, हरि हँसि छत्र धरै।
राजा कौन बड़ो रावन तैं, गर्बहि-गर्ब गरै।
रंकव कौन सुदामा हूँ तै, आप समान करै।
अधम कौन है अजामील तैं, जम तंह जात डरै।
कौन विरक्त अधिक नारद तैं, निसि दिन भ्रमत फिरै।
जोगी कौन बड़ौ संकर तैं, ताको काम छरै।
अधिक कुरूप कौन कुबिजा तैं, हरिपति पाइ तरै।
अधिक सुरूप कौन सीता तैं, जनम बियोग भरै।
यह गति-गति जानै नहि कोऊ, किहिं रस रसिक ढरै।
सूरदास भगवंत-भजन बिनु, फिरि-फिरि जठर जरै ॥ 4॥

– सूरदास

स्तुति खण्ड

सँवरौ आदि एक करतारू। जेहँ जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू॥
कीन्हेसि प्रथम जोति परगासू। कीन्हेसि तेहिं पिरीति कवितासू॥
कीन्हेसि अगिनि पवन जल खेहा। कीन्हेसि बहुतइ रंग उरेहा॥
कीन्हेसि धरती सरग पतारु। कीन्हेसि बरन-बरन अवतारू॥
कीन्हेसि सात दीप ब्रह्मंडा। कीन्हेसि भुवन चौदहउ खंडा॥
कीन्हेसि दिन दिनअर ससि राती। कीन्हेसि नखत तराइन पाँती॥
कीन्हेसि धूप सीउ और छाहाँ। कीन्हेसि मेघ बिजु तेहि माहाँ॥

कीन्ह सबइ अस जाकर दोसरहि छाज न काहु।
पहिलेहिं तेहिक नाउँ लइ कथा कहौं अवगाहु ॥ 1 ॥

कीन्हेसि हेवँ समुंद्र अपारा। कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा।।
कीन्हेसि नदी नार औ झारा। कीन्हेसि मगर मच्छ बहु बरना॥
कीन्हेसि सीप मोंति बहु भरे। कीन्हेसि बहुतइ नग निरमरे॥
कीन्हेसि वनखंड औ जरि मूरी। कीन्हेसि तरिवर तार खजूरी॥
कीन्हेसि साउज आरन रहहीं । कीन्हेसि पंखि उड़हि जहँ चहहीं॥
कीन्हेसि बरन खेत औ स्यामा। कीन्हेसि भूख नींद विसरामा॥
कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू। कीन्हेसि बहु ओषद बहु रोगू॥

निमिख न लाग कर ओहि सबइ कीन्ह पल एक।
गगन अंतरिख राखा बाज खंभ बिनु टेक ॥ 2 ॥

कीन्हेसि मानुस दिहिस बड़ाई। कीन्हेसि अन्न भुगुति तेंहि पाई।।
कीन्हेसि राजा भूँजहि राजू। कीन्हेसि हस्ति घोर तिन्ह साजू ॥
कीन्हेसि तिन्ह कहँ बहुत बेरासू। कीन्हेसि कोइ ठाकुर कोइ दासू॥
कीन्हेसि दरब गरब जेंहि होई। कीन्हेसि लोभ अघाइ न कोई॥
कीन्हेसि जिअन सदा सब चाहा। कीन्हेसि मीचु न कोई रहा॥
कीन्हेसि सुख औ कोउ अनंदू । कीन्हेसि दुख चिंता औ दंदू॥
कीन्हेसि कोई भिखारि कोई धनी। कीन्हेसि संपति विपति पुनि घनी॥

कीन्हेसि कोई निभरोसी कीन्हेसि कोई बरिआर।
छार हुते सब कीन्हेसि, पुनि कीन्हेसि सब छार ॥3 ॥

– मलिक मुहम्मद जायसी

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय -

1. पद में मीठे फल का आनंद लेने वाला कौन है ?
2. अवगुणों पर ध्यान न देने के लिए सूरदास ने किससे प्रार्थना की है ?
3. पारस में कौन-सा गुण पाया जाता है ?
4. जायसी के अनुसार संसार की सृष्टि किसने की है ?
5. ईश्वर ने रोगों को दूर करने के लिए मनुष्य को क्या दिया ?
6. 'स्तुति खंड' में जायसी ने कितने द्वीपों और भुवनों की चर्चा की है ?
7. जायसी ने किसका स्मरण करते हुए कथा लिखी है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. सूरदास ने निर्गुण की अपेक्षा सगुण को श्रेयस्कर क्यों माना है ?
2. गूँगा, फल के स्वाद का अनुभव किस तरह करता है ?
3. कुब्जा कौन थी ? उसका उद्धार कैसे हुआ ?
4. सूरदास ने स्वयं को 'कुटिल खल कामी' क्यों कहा है ?
5. जायसी के अनुसार परमात्मा ने किस-किस तरह के मनुष्य बनाए हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. सूरदास ने किस आधार पर ईश्वर को समदर्शी कहा है ?
2. निर्गुण और सगुण भक्ति में क्या अंतर है ?
3. ईश्वर ने प्रकृति का निर्माण कितने रूपों में किया है ? वर्णन कीजिए ।
4. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
   (अ) अविगत गति .... जो पावै।
   (ब) अधिक कुरूप कौन .... फिरि-फिरि जठर जरै।
   (स) कीन्हेसि मानुस दिहिसि .... अघाइ न कोई।

ध्यान दीजिए -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अस्तु वह अपने मन के भावों और विचारों को प्रकट करना चाहता है और दूसरे के भावों और विचारों से अवगत होना चाहता है। वाणी या शब्द के माध्यम से ही वह भावों और विचारों का आदान-प्रदान करता है। यही वाणी वार्ता, शास्त्र, काव्य या साहित्य के माध्यम से व्यक्त होती है।

जिसमें ज्ञान-विज्ञान की प्रधानता हो उसे शास्त्र कहते हैं और जिसमें भाव या प्रभाव की प्रधानता हो उसे काव्य या साहित्य कहा जाता है। दूसरे शब्दों में समस्त भाव प्रधान साहित्य को काव्य कहते हैं। विद्वानों ने काव्य के विभिन्न लक्षण बताए हैं।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार 'रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।' (वाक्यं रसात्मकं काव्यम्) पंडितराज जगन्नाथ 'रमणीय अर्थ के प्रतिपादक धर्म को काव्य कहते हैं।' (रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्)। आचार्य रामचंद्र

शुक्ल के अनुसार 'जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। जयशंकर प्रसाद ने काव्य को 'आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति कहा है।'

सभी विद्वानों के निष्कर्षानुसार भाषा के माध्यम से सौंदर्यानुभूति की अभिव्यक्ति काव्य है।

काव्य के भेद –

काव्य के बाह्य रूप के आधार पर दो भेद किए जाते हैं – 1. पद्यकाव्य 2. गद्यकाव्य

पद्यकाव्य में छंद अथवा नियमित लय का प्रयोग किसी न किसी रूप में अनिवार्य रूप से किया जाता है, किन्तु गद्य-काव्य में उसका प्रयोग नहीं किया जाता।

पद्यकाव्य –

पद्यकाव्य के प्रमुख दो भेद है – 1. मुक्तक काव्य 2. प्रबंध काव्य

1. मुक्तक काव्य – मुक्तक काव्य में प्रत्येक छंद अपने आप में स्वतंत्र और पूर्ण रहता है। इसमें पूर्वापर संबंध नहीं रहता अत: छंदों या गीत का क्रम बदल देने पर भाव स्पष्ट करने में असुविधा नहीं होती। सामान्यत: इसके अन्तर्गत गीत, कविता, दोहा, पद, आदि आते हैं। सूर, मीरा, बिहारी, रहीम जैसे कवियों के गेय पद मुक्तक काव्य के उदाहरण हैं।

2. प्रबंध काव्य – प्रबंध काव्य में अनेक छंद किसी एक कथासूत्र में पिरोए हुए रहते हैं। छंदो के क्रम को बदला नहीं जा सकता। प्रबंध काव्य विस्तृत होता है, उसमें जीवन की विभिन्न झाँकियाँ रहती हैं। इसमें किसी व्यक्ति के जीवन-चरित्र का वर्णन होता है।

प्रबंध काव्य के दो उपभेद होते है – 1. महाकाव्य 2. खंडकाव्य

महाकाव्य –

महाकाव्य में जीवन का अथवा घटना विशेष का सांगोपांग चित्रण होता है। वृहद् काव्य होने के कारण ही इसे महाकाव्य कहा जाता है। महाकाव्य के प्रमुख लक्षण हैं –

1. महाकाव्य में आठ या उससे अधिक सर्ग होते हैं।
2. महाकाव्य का नायक धीरोदात्त गुणों से युक्त होता हैं।
3. इसमें शांत, वीर अथवा शृंगार रस में से किसी एक की प्रधानता होती है।
4. महाकाव्य में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।
5. इसमें अनेक छंदों का प्रयोग होता है।

प्रमुख महाकाव्य हैं – पृथ्वीराज रासो, पद्मावत, रामचरित मानस, साकेत, कामायनी आदि।

(रामचरित मानस में सात सर्ग होने पर भी इसे महाकाव्य के अन्तर्गत रखा गया है।)

खंडकाव्य –

खंडकाव्य में नायक के जीवन की किसी एक घटना अथवा हृदयस्पर्शी अंश का पूर्णता के साथ अंकन किया जाता है। खंडकाव्य के प्रमुख लक्षण हैं –

1. खंडकाव्य में मानव के किसी एक पक्ष का चित्रण होता है।
2. इसमें एक ही छंद का प्रयोग होता है।
3. कथावस्तु पौराणिक या ऐतिहासिक विषयों पर आधारित होती है।
4. शृंगार व करुण रस प्रधान होता है।
5. इसका उद्देश्य महान होता है।

प्रमुख खंडकाव्य हैं – पंचवटी, जयद्रथ वध, सुदामाचरित, तुलसीदास, हल्दीघाटी का युद्ध आदि।

योग्यता-विस्तार

1. सूरदासजी के अन्य पद खोजकर पढ़िए।
2. भक्तिकाल के सगुण और निर्गुण धारा के कवियों की सूची बनाइए।
3. भक्तिकालीन कवियों के चित्र एकत्रित कर उन्हें कालक्रमानुसार चिपकाकर एक एलबम तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

अविगत = जिसे जाना न जा सके। **अगोचर**=जो दिखाई न दे। **अन्तरगत** = हृदय। **अमित** = अधिक। **तोष** = संतोष। **निरालम्ब** = बिना सहारे। **बधिक** = बध करने वाला। **सुरसरि** = गंगा। **पारस** = एक विशेष पत्थर जो लोहे को सोना कर देता है। **कंचन** = सोना, स्वर्ण। **कुटिल** = टेढ़े स्वाभाव का। **खल** = दुष्ट। **अधम** = नीच। **श्रीपति** = विष्णु। **रंक** = गरीब।

सबरौ = स्मरण करता हूँ। **करतारू** = ईश्वर। **खेहा** = मिट्टी। **उरेहा** = चित्र बनाना। **दिनअर** = सूर्य। **तराइन** = तारागण। **सीउ** = शीत। **माझा** = मध्य, बीच में। **अस** = इस प्रकार। **दोसरई** = दूसरा। **छाज** = सुशोभित होना। **अवगाहूँ** = अवगाहन करना, डूबना। **खिखिंद** = किष्किंधा। **निरमरे** = निर्मल। **जरि मूरी** = जड़ और मूल। **साउज** = जानवर। **आरन** = अरण्य जंगल। **औषद्** = औषधि। **निमिख** = क्षण। **अंतरिव**=अंतरिक्ष। **बाज**=बिना। **दिहिस** = दी। **भुगति** = भोजन। **भूजँहि** = उपभोग करते है। **घोर** = घोड़ा। **बेरासू** = विलास। **जिअन** = जीवन। **मीचु** = मृत्यु। **द्वंदू** = द्वन्द्व। **बरियार** = शक्तिशाली।